



## International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519

IJSR 2022; 8(5): 238-242

© 2022 IJSR

[www.anantaajournal.com](http://www.anantaajournal.com)

Received: 26-07-2022

Accepted: 30-08-2022

डॉ. निशा गोयल

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत

विभाग, कालिंदी

महाविद्यालय, दिल्ली

विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

## कोरोना महामारी का मीडिया पर प्रभाव

डॉ. निशा गोयल

DOI: <https://doi.org/10.22271/23947519.2022.v8.i5d.1896>

सारांश

वर्ष 2020 में कोरोना वायरस महामारी भयंकर रूप से भारत तथा विश्व के अन्य देशों में फैली, जिसका तत्काल रूप से कोई इलाज व टीका नहीं था। इसकासंक्रमण होने से छोटी से लेकर बड़ी बीमारी, जैसे- बुखार, खांसी से लेकर मृत्यु तक हो सकती थी। इसके बचाव के लिए देशभर में सम्पूर्ण लॉकडाउनका आह्वान किया गया, जिससे सभी देशभर के नागरिकों को अपने घरों में कैद होना पड़ा, जिससे उनका जीवन स्थिर हो गया और सब में एक उदासीनता छा गयी। इस उदासीनता और ठहराव को दूर करने में सोशल मीडिया ने अपनी अहम भूमिका निभाई और सरकार ने भी विविध आयामों द्वारा देश की जनता का मनोरंजन किया। दूरदर्शन पर कार्यक्रमों का पुनः प्रसारण किया गया तथा लोगों ने अपनी सुविधा के लिए घर बैठे इंटरनेट से अपनी उपयोगी वस्तुओं की सुरक्षित रूप से खरीदारी की। कोरोना काल केसंकट की घड़ी में लोगों को दुःख तकलीफ तो हुई, परन्तु इसने एक नए तथा आधुनिक युग की शुरुआत कर जीवन जीने का एक नया मार्ग दिखाया।

कूटशब्द: कोरोना, महामारी, मीडिया, सोशल मीडिया, इंटरनेट

प्रस्तावना

कोरोनावायरस (Coronavirus) कई प्रकार के विषाणुओं (वायरस) का एक समूह है, जो स्तनधारियों और पक्षियों में रोग उत्पन्न करता है। यह आरएनए वायरस होते हैं। इनके कारण मानवों में श्वास तंत्र संक्रमण पैदा हो सकता है, जिसकी गहनता हल्की (जैसे सर्दी-जुकाम) से लेकर अति गम्भीर (जैसे, मृत्यु) तक हो सकती है। इनकी रोकथाम के लिए कोई टीका (वैक्सीन) अभी उपलब्ध नहीं है और उपचार के लिए प्राणी की अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है। अभी तक रोगलक्षणों (जैसे कि निर्जलीकरण या डीहाइड्रेशन, ज्वर, आदि) का उपचार किया जाता है ताकि संक्रमण से लड़ते हुए शरीर की शक्ति बनी रहे।

Corresponding Author:

डॉ. निशा गोयल

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत

विभाग, कालिंदी

महाविद्यालय, दिल्ली

विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

चीन के वुहान शहर से उत्पन्न होने वाला 2019 नोवेल कोरोनावायरस इसी समूह के वायरसों का एक उदहारण है, जिसका संक्रमण सन् 2019-20 काल में तेज़ी से उभरकर 2019-20 वुहान कोरोना वायरस प्रकोप के रूप में फैलता जा रहा है। हाल ही में WHO ने इसका नाम COVID-19 रखा।

भारत में इसके रोकथाम के लिये सभी गैर आवश्यक कार्य रोक दिये गये थे, और लोगों को अपने घरों में रहने के निर्देश दिये गये थे। बचाव ही इसका एकमात्र इलाज था। इसी को देखते हुए भारत सरकार ने पूरे देश में 17 मई तक लॉकडाउन की घोषणा कर दी थी, जिसे बढ़ा कर 31 मई कर दिया गया था। इसके बाद कुछ छूट के साथ 31 जुलाई तक लॉकडाउन जारी रहा जिसे बढ़ाकर 31 अगस्त तक कर दिया गया है।

इस कोरोना महामारी के दौर में लोगों के जीवन में ठहराव आ गया तो मीडिया ने उनके लिए एक सहारे का कार्य किया और उन्हें अपने घर में सुरक्षित रहने के लिए तैयार किया और उनका मनोरंजन किया और उनको सम्बल प्रदान किया।

मीडिया जनसमूह तक सूचना, शिक्षा और मनोरंजन पहुँचाने का एक माध्यम है। यह संचार का सरल और सक्षम साधन है, जो अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में मुख्य भूमिका निभाता है।

मीडिया के 3 प्रकार माने जा सकते हैं :-

1. **प्रिंट मीडिया** - समाचार पत्र, पत्रिकाएं
2. **इलेक्ट्रॉनिक मीडिया** - रेडियो, टेलीविज़न
3. **सोशल मीडिया** - फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सप्प, इंटरनेट आदि।

1. **प्रिंट मीडिया** - किसी सूचना या सन्देश को लिखित माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने में इसका बहुत बड़ा योगदान है। यह मीडिया का वह महत्वपूर्ण भाग है, जिसने इतिहास के सभी पहलुओं को दर्शाने में मदद की है।

भारत में मीडिया का विकास 19वीं सदी में हुआ। 1826 में हिंदी का पहला अखबार **उदन्त मार्तण्ड** आया। आज़ादी से पूर्व के अखबारों में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आवाज़ उठाने की बात कही जाती थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अखबारों का पैटर्न बदला और अब अखबारों में सभी क्षेत्रों की खबरों को महत्व दिया जाने लगा। इनमें नवभारत टाइम्स और हिंदुस्तान आदि अखबार ने अपनी एक अहम भूमिका बना ली थी, परन्तु आज के महामारी के युग में जिस समय पूर्ण रूप से लॉकडाउन लगा हुआ था, अखबार छपने भी बंद हो गए थे और कुछ लोगों ने अखबार को लेने से भी मना कर दिया था, क्योंकि उस के माध्यम से भी घर में बीमारी आ सकती थी। उस समय में अगर यह सोशल मीडिया ना होता तो लोग बाहरी दुनिया से कट जाते और उन्हें दुनिया की कोई खबर नहीं रहती इस समय लोगों ने ई-अखबार के माध्यम से सूचनाएं प्राप्त कीं।

संस्कृत में भी पहले मात्र एक दैनिक समाचार पत्र “सुधर्मा” छपता था, परन्तु आज बनारस से “विश्वस्य वृत्तान्तः” और उत्तराखंड से “द्रुतवार्ता” नाम का ई-समाचार पत्र इस महामारी के युग में छपना शुरू हुआ।

हिंदी में गृहशोभा, सरिता, कादम्बिनी, नंदन, चंपक आदि पत्रिकाएं प्रचुर मात्रा में छपती थीं और इसी मात्रा में इनकी बिक्री भी होती थी, परन्तु आज इस महामारी के युग में इन सभी का प्रकाशन ई-पत्रिकाओं के रूप में होने लगा।

कुछ जर्नल जैसे वाक् सुधा, प्राचीज्योति के साथ साथ ई-जर्नल अनंता आदि का भी प्रकाशन आज के समय में होने लगा है।

2. **इलेक्ट्रॉनिक मीडिया** - सन 1927 में भारत में ब्रिटिश राज के साथ ही रेडियो का प्रसारण भी शुरू हुआ। आज़ादी के बाद इसका नाम आल इंडिया रेडियो या आकाशवाणी रखा गया। तब और आज में कितना फर्क हो गया है। एक

समय था जब रेडियो ही संचार का प्रमुख साधन था। रेडियो रखना, रेडियो सुनना, और रेडियो के कार्यक्रमों में भाग लेना गौरव की बात होती थी। टेलीविज़न के आ जाने के बाद रेडियो श्रोताओं में कमी आयी।

1965 में आल इंडिया रेडियो ने प्रतिदिन टीवी ट्रांसमिशन शुरू किया।

1976 में सरकार ने टीवी को आल इंडिया रेडियो से अलग कर दिया।

1982 में पहली बार राष्ट्रीय टेलीविज़न चैनल की शुरुआत हुई।

21वीं शती के पहले दशक में एक तरफ जहां जनमानस पर धारावाहिकों ने अमिट छाप छोड़ी, तो दूसरी तरफ रिअलिटी शोज ने आम आदमी को सपने में जीने को मजबूर कर दिया। एक तरफ बच्चों को 24 घंटों का कार्टून धमाल मिला, तो दूसरी तरफ बुजुर्गों के खालीपन में आध्यात्मिक चैनल उनके साथी बन बैठे।

आज के महामारी के युग में जब लॉकडाउन के कारण नए सीरियल बनने बंद हो गए, तब सरकार ने दूरदर्शन पर रामायण, महाभारत जैसे धार्मिक; चाणक्य जैसे ऐतिहासिक; ब्योमकेश बक्शी जैसे जासूसी; श्रीमान श्रीमती, ये जो है जिन्दगी जैसे पारिवारिक और बच्चों का पसंदीदा शक्तिमान जैसे धारावाहिकों का प्रसारण किया, तो दूरदर्शन की लुप्त होती छवि को फिर से एक नवीन जीवन मिल गया और उसकी टीआरपी कई गुना बढ़ गयी।

**3. सोशल मीडिया** - एक ऐसा मीडिया है, जो बाकी सारे मीडिया से अलग है। सोशल मीडिया इंटरनेट के माध्यम से एक वर्चुअल वर्ल्ड बनाता है, जिसे उपयोग करने वाला व्यक्ति सोशल मीडिया के किसी प्लेटफॉर्म फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि का उपयोग कर पहुँच बना सकता है। आज के दौर में सोशल मीडिया जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है

जिसके बहुत सारे फीचर हैं, जैसे कि सूचनाएं प्रदान करना, मनोरंजन करना और शिक्षित करना मुख्य रूप से शामिल हैं।

इस महामारी के समय में जब लोग आपस में एक दूसरे से पूर्ण रूप से कट चुके थे, क्योंकि आना जाना हो नहीं सकता था, एक दूसरे से मिल नहीं सकते थे, तो सब फोन के माध्यम से या व्हाट्सएप के माध्यम से एक दूसरे से रूबरू बात भी कर सकते थे, वीडियो कॉलिंग के जरिए और इसी के अंतर्गत जब लोग घर में बैठे तो उन्हें अपना स्वाध्याय करने का भी काफी समय मिल गया और उन्होंने अपने इस समय का इंटरनेट के माध्यम से इतना अच्छा उपयोग किया कि जो पहले विश्वविद्यालय या किसी संस्थान में संगोष्ठी हुआ करती थी वह अब वेबीनार के माध्यम से **गूगल मीट** या **ज़ूम** के माध्यम से हुई। बड़े आराम से दुनिया भर के लोगों को उसमें जोड़ा गया, उसमें लोगों ने अपने विचारों का आदान प्रदान किया जिसमें कि देश क्या विदेश से भी लोग उसमें जुड़े। कुछ साप्ताहिक या द्विसाप्ताहिक कार्यशाला का भी आयोजन किया गया, जिसमें इसी महामारी के समय में ऑनलाइन क्लास कैसे ली जाती है उससे संबंधित विषयों पर भी विशेषज्ञों ने अपनी जानकारियां दी और लोगों ने उस ज्ञान को अर्जित करते हुए अपने आपको काफी हद तक आज के युग से संपन्न किया।

सोशल मीडिया के अनेक फायदों में से एक सबसे बड़ा फायदा यह है कि आज के समय में हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने जितनी भी योजनाएं गरीबों के लिए या किसानों के लिए बनाई, उन सब का अपने उद्बोधन द्वारा उन व्यक्तियों तक सीधा प्रसारण कर दिया गया। उन्होंने अपनी मन की बात के द्वारा जो वह सोचते हैं, जो वह देश के लिए महसूस करते हैं, अपने उन सारे उद्गारों को जनता के सम्मुख रखा और जनता ने उसको सराहा भी, और कई योजनाएं जिससे कि गरीबों को

फायदा हुआ या जैसे कि जो लोग इतने मुश्किलों में रह रहे थे या जिनको खाना भी नहीं मिल रहा था उनको जो जो भी सहूलियत दी जा सकती है उनके बारे में जैसे कि लोगों को जानकारी भी नहीं होती थी, उन सबको इंटरनेट के माध्यम से लोगों तक सूचनाएं पहुंचाने का कार्य किया गया, जैसे कि इस समय कोरोनावायरस के क्या परिणाम हुए, क्या दुष्परिणाम हुए, किस तरह से इससे जुड़ा जा सकता है, इसके अच्छे और बुरे दोनों तरह के पहलुओं को सोशल मीडिया ने अपने आंकड़ों के द्वारा सिर्फ ऐसे ही नहीं, बल्कि पुख्ता सबूतों के साथ प्रस्तुत भी किया और उससे अपने को बचाने के लिए उसके बारे में जानकारी के लिए एक सोशल ऐप आरोग्य सेतु का भी निर्माण किया गया जिसे देश के सब लोगों ने अपने मोबाइल में सेव किया। जैसे कि धीरुभाई अंबानी जी का सपना था कि किसी समय में मोबाइल नामक जो यह वस्तु है, संचार का माध्यम है, प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में होगा, वह आज साकार होते हुए दिखाई दिया। इस महामारी के युग में इसने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है कि सब लोगों के पास मोबाइल नामक चीज है, जो एक बहुत अधिक शक्तिशाली काम करती है, लोगों को जोड़ने का और जिसके पास जो गरीब है, जो टीवी नहीं रख सकता है, जिसका छोटा सा घर है कि जिस में बत्ती नहीं आती तो उसमें क्या करें, उस समय में इस मोबाइल ने अपना पूरा योगदान दिया और एक-एक पल पल की देश विदेश की सब खबरों को जन जन तक पहुंचाने का कार्य इस मोबाइल के माध्यम से किया गया।

दूसरा यह बहुत बड़ा योगदान करता है कि अपने दूर बैठे हुए रिश्तेदारों से, अपने मित्रों से, आराम से अपनी सूचनाएं अपना सुख दुःख साझा किया जा सकता है। इसी सन्दर्भ में इसका उपयोग किया जाता था। तत्पश्चात इसका विस्तार हुआ और आज ये 4G में उपलब्ध है जो कि सूचनाओं को बहुत तेजी से ग्रहण करता है। अपने विचारों का आदान

प्रदान करने में इसकी भाषा बोल चाल की भाषा होती है।

जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री जी का कहना था कि आपदा को अवसर में बदलें, उसी कथन को सत्य सिद्ध करते हुए हमारे अध्यापक और छात्रों ने नई तकनीकों का प्रयोग किया और गूगल में गूगल मीट, गूगल क्लासरूम, जूम आदि का इस्तेमाल किया और छात्रों और अध्यापकों ने सुचारु रूप से अध्ययन किया, छात्रों ने अपने सवाल पूछे और अध्यापकों ने अपने ज्ञान से उनका ज्ञान वर्धन किया, और इस महामारी के रूप में यह संदेश दिया कि अध्ययन करने के लिए केवल स्कूल, कॉलेज जाना ही पर्याप्त नहीं है, विद्या घर पर बैठे भी अर्जित की जा सकती है। साथ ही अंतिम वर्ष के छात्र जो इस दुविधा में थे कि उनका विदाई समारोह का सपना टूट जाएगा, उसको भी सोशल मीडिया के द्वारा उजागर कर उनके लिए विदाई समारोह का आयोजन किया गया। इसी प्रकार प्रत्येक महाविद्यालय में जूम तथा गूगल मीट के माध्यम से वार्षिक महोत्सव का भी आयोजन किया गया।

सोशल मीडिया का प्रमुख माध्यम है इंटरनेट। इंटरनेट के माध्यम से ही व्यक्ति सोशल मीडिया का उपभोग कर सकता है। सोशल मीडिया में व्यक्ति पढ़कर, सुनकर, देखकर, हर प्रकार से देश विदेश में चल रहे घटनाक्रमों का विस्तृत रूप से आंकलन कर सकता है। इसके लिए उसको कहीं आने जाने की आवश्यकता नहीं है। वह अपने घर में बैठे-बैठे भी देश विदेश की खबरों को प्रत्यक्ष रूप से देख सकता है।

सोशल मीडिया के माध्यम बहुत ही फायदेमंद है, परंतु साथ ही इसके काफी नुकसान भी हैं। लोगों की अपनी-अपनी प्रतिक्रिया होती हैं कि वह किसी भी वस्तु को एक सकारात्मक रूप में लेते हैं या नकारात्मक रूप में। इसी प्रकार सोशल मीडिया को भी कई लोगों ने सकारात्मक रूप में लिया तो कुछ ने नकारात्मक रूप में।

जबकि इस महामारी के समय में इंटरनेट के सोशल मीडिया ने अपनी भूमिका इस तरह से निभाई कि लोग भारत ही क्या, विदेश और पूरे संसार की जानकारियां प्राप्त करने में सक्षम हो सके, और घर बैठे ही उन्हें हर प्रकार की खबर आसानी से प्राप्त हो जाती थी।

सोशल मीडिया का एक अहम हिस्सा है- ट्विटर। इस महामारी के दौर में जब लोग अपने घर नहीं जा पा रहे थे, तब लोगों का मसीहा बनकर अभिनेता सोनू सूद आगे आये और उन्होंने प्रवासियों को उनके घरों तक सुरक्षित पहुँचाने का ज़िम्मा उठाया और ट्विटर के माध्यम से उन लोगों के घर का पता जानकर उनको सुविधा पूर्वक सुरक्षित उनके घर पहुँचाया। साथ ही जब लोगों को मेडिकल सुविधा उपलब्ध नहीं हो पा रही थी, तब लोगों ने ट्विटर के माध्यम से ही सोनू सूद को संपर्क किया और इसी सोशल मीडिया के महत्वपूर्ण हिस्से के द्वारा लाखों लोगों की मदद करने में अभिनेता सोनू सूद सक्षम हुए।

सोशल मीडिया ने आज अपना एक अद्वितीय स्थान प्राप्त किया है, क्योंकि इसने बहुत लोगों का जीवन सरल कर दिया है, परंतु जैसे हर बुराई में कुछ अच्छाई छिपी होती है उसी तरह हर एक नई तकनीक में भी कुछ खामियां जरूर होती हैं, ऐसा ही कुछ सोशल मीडिया में भी है। इतने फायदे होने के साथ-साथ सोशल मीडिया के कुछ दुरुपयोग भी हैं सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग करने से इंसान की मानसिक सोच क्षीण हो जाती है और वह अपने मस्तिष्क का उस रूप से उपयोग नहीं कर पाता जितना एक आम मनुष्य का मस्तिष्क काम करता है क्योंकि वह पूर्ण रूप से इस पर ही आश्रित हो जाता है। साथ ही यह बच्चों के ज्ञान वर्धन की जगह मनोरंजन का अत्यधिक साधन बन गया है जिस पर वह घंटों घंटों अपना जीवन व्यतीत करते हैं और अध्ययन में उनका मन नहीं लगता और खेलकूद से भी वंचित रह जाते हैं, जिससे उनका शारीरिक विकास भी नहीं हो पाता। समाज के कुछ बुरे लोग या बुरी मानसिकता रखने वाले दुष्ट लोग

इसको दूसरों के शोषण का जरिया बनाकर उपयोग करते हैं, जैसे किसी से बिना अनुमति लिए उसके पर्सनल तथा अश्लील फोटो खींचकर सोशल मीडिया पर डाल देना, इससे पायरेसी भी बढ़ती है जो कि हमारे संविधान में एक जुर्म माना जाता है। साथ ही लोग इस पर इतने आश्रित हो गए हैं कि वे कहीं भी खाना खाने जाते हैं, खरीदारी करने जाते हैं, घूमने जाते हैं, तो वे सोशल मीडिया पर अपने स्टेटस अपडेट करते हैं, जिससे सबको पता चल जाता है कि वे क्या क्रियाएं कर रहे हैं और लोग उसका गलत फायदा उठाते हुए उनका शोषण करते हैं।

इसी संदर्भ में मुझे एक घटना याद आ रही है कि, जैसे लोग कहीं बाहर घूमने जाते हैं तो वह सोशल मीडिया पर सबको खबर देने के लिए इस बात को लगा देते हैं कि हम इतने दिन तक के लिए वहां जा रहे हैं, पीछे से जो उसका गलत फायदा उठाते हैं, उन लोगों को भी पता चल जाता है उनको पता है कि घर में कोई व्यक्ति नहीं है, इतने दिन तक आराम से वह कुछ भी कर सकते हैं, ऐसा ही कई बार समाचार पत्रों में सूचना आयी है कि उस समय उनके घर में चोरी हो गई और उनका पूरा घर आराम से चोरों ने साफ कर दिया।

### निष्कर्ष

आज का युग सोशल मीडिया का युग है, जो पारंपरिक तथा सामाजिक तरीकों से बिल्कुल ही अलग है। सोशल मीडिया आज के समाज का एक अभिन्न हिस्सा है, जिसने प्रत्येक मनुष्य को एक दूसरे से जोड़ लिया है और सोशल मीडिया अब एक प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अहम हिस्सा बन चुका है।

### सन्दर्भ

1. Wikipedia.org
2. Wordpress.com
3. Webduniya.com
4. Facebook.com